श्रीदत्तबावनी (चौपाई-रूपान्तर)

■ प्रस्तुति : अंकुर नागपाल (दिल्ली)

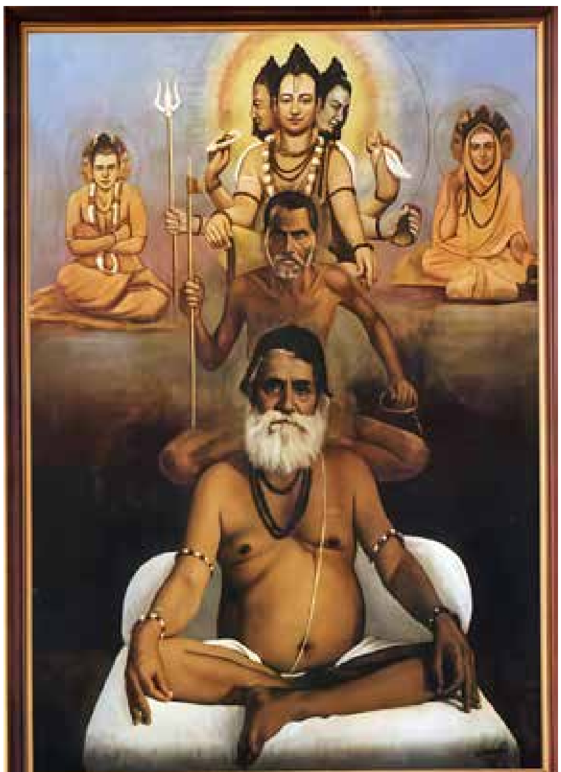
'श्रीदत्तबावनी' मूलतः गुजराती भाषा में निबद्ध एक अद्भुत और दिव्य स्तोत्रकाव्य है; जिसकी रचना दत्तस्वरूप परमपूज्य अनन्तश्री वासुदेवानन्द सरस्वती (टेंबे स्वामी) जी महाराज के शिष्य पूज्यपाद 'श्रीरंग अवधूत महाराज' (नारेश्वर) ने सन् 1935 ई. को सिद्धनाथ महादेव मन्दिर (मेहसाणा) में माघ शुक्ल प्रतिपदा के दिन, अपनी शिष्या लक्ष्मीबेन त्रिपाठी को प्रेतबाधा एवं शारीरिक-मानसिक रोगों से मुक्ति दिलाने हेतु की थी। फलतः यह पाठ सभी कामनाओं को पूर्ण करने एवं भूत, प्रेत, पितर आदि सहित सभी रोग, शोक एवं बाधाओं को शान्त करने की अपूर्व शक्ति रखता है। इसमें श्रीगुरुचरित्र, दत्तपुराण, दत्तमाहात्म्य श्रीपादचरित्रामृत आदि ग्रन्थों का सार सन्निहित है।

चूंकि इसमें 52 पंक्तियाँ हैं, इसलिए इसको 'बावनी' कहते हैं। वस्तुतः पूज्य स्वामीजी 'दत्तचालीसा' लिखना चाहते थे, किन्तु लिखते-लिखते 52 पंक्तियाँ लिख गए। जब उन्होंने कुछ पंक्तियों को हटाना चाहा, तो स्वयं भगवान् दत्तात्रेय ने अपना साक्षात्कार देकर उन्हें निर्देश दिया कि "एक वर्ष में 52 सप्ताह होते हैं और 'गुरुचरित्र' में 52 अध्याय हैं। इसलिए हमारी ही प्रेरणा से ये 52 पंक्तियाँ लिखी गई हैं।"

सामान्यतः 'दत्तबावनी' का एक पाठ प्रतिदिन करना चाहिए (औसतन 3-4 मिनट)। विशेषतः 52 गुरुवार तक प्रत्येक गुरुवार को 52 बार इसका पाठ करने से एक 'नियम' पूर्ण होता है; किन्तु कोई गुरुवार छूटना नहीं चाहिए। गुरुवार एवं शुक्रवार के सूर्योदयों के बीच एक या अधिक बैठकों में अपनी सुविधानुसार समय निकालकर कुल 52 पाठ करने चाहिए। पाठ के समय भगवान् दत्तात्रेय के निमित्त धूप जलाना चाहिए; जिसकी अभिमन्त्रित विभूति (राख) का संग्रह भी कर सकते हैं। यदि किसी गुरुवार को अशुद्धि (सूतक या मासिक धर्म आदि) आ जाए, तो उस दिन पाठ न करके अशुद्धि-निवृत्ति पर मिलते पहले गुरुवार से क्रम को यथावत् जारी रखना चाहिए। प्रत्येक आयु, वर्ण एवं अवस्था के श्रद्धालु हेतु यह उपयोगी है। मूलपाठ निम्नांकित है:

॥ अवधूत चिन्तन श्रीगुरुदेव दत्त॥

जय योगीश्वर दत्त दयाळ। तुंज एक जगमां प्रतिपाळ (1)
जय जोगेस्वर दत्त दयाला। नाथ एक जग के प्रतिपाला।
अत्र्यनसूया करी निमित्त। प्रगट्यो जगकारण निश्चित (2)
अत्रि अनसूइया गृह ताता। जगकारन संभव बिख्याता।
ब्रह्माहरिहरनो अवतार। शरणागतनो तारणहार (3)
ब्रह्मा हरि हर कर अवतारा। सरनागत के तारनहारा।
अन्तर्यामि सत् चित् सुख। बहार सद्‌गुरु द्विभुज सुमुख (4)
अंतरजामी सत चित नंदा। सदगुर बाहरि मनुज मुकुंदा।
झोळी अन्नपुर्णा कर मांह्य। शांति कमंडल कर सोहाय (5)
झोली अन्नपूरना साजै। सांति कमंडलु हाथ बिराजै।
क्यांय चतुर्भुज षड्‌भुज सार। अनंतबाहु तुं निर्धार (6)
देव चतुरभुज षटभुज धारा। अमितभुजा जग के आधारा।



आव्यो शरणे बाळ अजाण। ऊठ दिगंबर चाल्या प्राण (7)
गहौं सरन बालक उद्धारो। उठहु दिगंबर जीव उबारो।
सूणी अर्जुन केरो साद। रीझ्यो पूर्वे तु साक्षात् (8)
सुनि अर्जुन कर करुन पुकारा। रीझत नाथ भए साकारा।
दीधी ऋद्धि सिद्धि अपार। अंते मुक्ति महापद सार (9)
रिद्धि सिद्धि सबु दीन्ह अपारा। अंत मुकुति पद परम उदारा।
कीधो आजे केम विलंब। तुजविन मुजने ना आलम्ब (10)
नाथ करत किमि आजु बिलंबा। तुम बिनु मोर कवन अवलंबा।
विष्णुशर्म द्विज तार्यो एम। जम्यो श्राद्धमां देखी प्रेम (11)
भगति बिष्नुसरमा की चीन्हा। श्राद्ध भोज जाकर तुम लीन्हा।
जंभदैत्यथी त्रास्या देव। कीधी म्हेर तें त्यां ततखेंव (12)
जंभ दनुज पीड़ित सुर सारे। कीन्हि कृपा पुनि नाथ उबारे।
विस्तारी माया दितिसुत। इन्द्रकरे हणाव्यो तूर्त (13)
करि माया सुरपति के हाथा। हता सपदि तुम दानवनाथा।
एवी लीला कंई कंई शर्व। कीधी वर्णवे को ते सर्व (14)
सरब अपार चरित तव लीला। सरबत बरनै को सुभसीला।
दोड्यो आयु सुतने काम। कीधो एने तें निष्काम (15)
सुत हित तपते आयुष राजा। प्रसाद तव भे पूरनकाजा।
बोध्या यदु ने परशुराम। साध्यदेव प्रह्लाद अकाम (16)
उपदेसे जदु ओ भृगुरामा। साध्य सबै प्रहलाद अकामा।
एवी तारी कृपा अगाध। केम सूणे ना मारो साद (17)
कृपा नाथ तव परम अगाधा। तौ मम लागि कहाँ ते बाधा।
दोड अंत ना देख अनंत। मा कर अधवच शिशुनो अंत (18)
अंत मोर देखहु न अनंता। तजहु न बालक अब भगवंता।
जोइ द्विजस्त्री केरो स्नेह। थयो पुत्र तु निःसंदेह (19)
भूसुरतिय कर नेह अपारा। पेखि भये तुम बिप्रकुमारा।
स्मर्तृगामि कलितार कृपाळ। तार्यो धोबी छेक गमार (20)
सुमिरत आवै देव कृपाला। कलिजुग तारा रजक दयाला।
पेटपीडथी तार्यो विप्र। ब्राह्मणशेठ उगार्यो क्षिप्र (21)
उदरसूल तें बिप्र उबारा। बामन धन दे तुरत संवारा।
करे केम ना मारी व्हार। जो आणिगम एकज वार (22)
तो मो पर सनेह मुनिराया। कत न भयउ भाखहु करि दाया।
शुष्क काष्ठणे आण्यां पत्र। थयो केम उदासीन अत्र (23)
सुष्क काठ महँ पल्लब धरते। कत न अनुग्रह मो पर करते।
जर्जर वंध्या केरां स्वप्न। कर्या सफळ तें सुतनां कृत्स्न (24)
जर्जर वंध्या कर सुतदाता। सफल सुपन कीन्हा बरदाता।
करी दूर ब्राह्मणनो कोढ। कीधा पूरण एना कोड (25)
मेटि बिप्र के कोढ कराला। अभिमत पूरन कियो कृपाला।
वंध्या भेंस दूझवी देव। हर्युं दारिद्र्य तें ततखेव (26)
वंध्या महिषी नीक कीन्ह जब। दारिद दूर भए तिसके तब।
झालर खाई रीझयो एम। दीधो सुवर्णघट सप्रेम (27)
पाइ सेंव तुम तृप्त भये जब। कनक कुंभ दीन्हा तिसको तब।
ब्राह्मणस्त्रीनो मृत भरथार। कीधो सजीवन तें निर्धार (28)
बामन-तिय कर मृत भरतारा। संजीवा तुम सन निर्धारा।
पिशाच पीडा कीधी दूर। विप्रपुत्र उठाड्यो शूर (29)
बाल भूमिसुर केरि पिसाचा। सपदि दूर कीन्हा बल साचा।
हरी विप्रमद अंत्यजहाथ। रक्ष्यो भक्त त्रिविक्रम तात (30)
द्विजमद भंज्यौ अंत्यज हाथा। राखा भगत तिविक्रम नाथा।
निमेषमात्रे तंतुक एक। पहोंचाड्यो श्रीशैले देख (31)
निमिष माहिं तंतुक लै जाइ। सैल सिखर सिव दरस कराइ।
एकी साथे आठ स्वरूप। धरी देव बहुरूप अरूप (32)
अष्ट रूप धारा इक साथा। जदपि अरूप सदा हरि नाथा।
संतोष्या निज भक्त सुजात। आपी परचाओ साक्षात (33)
संतोषे निज भगत सुजाना। आपु जाइ तुम कृपानिधाना।
यवनराजनी टाळी पीड। जातपातनी तने न चीड (34)
जवन केरि पीड़ा हरि लीन्ही। नहि तिस जाति पाँति तुम चीन्ही।
रामकृष्णरूपे तें एम। कीधी लीलाओ कंई तेम (35)
राउर राम कृष्न अवतारा। लीला कीन्ह बहुरि बिस्तारा।
तार्या पथ्थर गणिका व्याध। पशुपंखी पण तुजने साध (36)
तिय पाथर गनिका उद्धारे। पसु पंछी आदिक सब तारे।
अधमओधारण तारूं नाम। गातां सरे न शां शां काम (37)
अधम उधारक है तव नामा। गावत सरते सब जन कामा।
आधि व्याधि उपाधि सर्व। टळे स्मरणमात्रथी शर्व (38)
आधि बिआधि उपाधिक गरबा। जपत नाम टरते नित सरबा।
मूठचोट ना लागे जाण। पामे नर स्मरणे निर्वाण (39)
मूठ चोट संभव नहिं आना। सुमिरन ते होवे निरबाना।
डाकण शाकण भेंसासुर। भूत पिशाचो जंद असुर (40)
डाकिनि साकिनि महिषासुर जे। प्रेत पिसाचक भूत निकर ते।
नासे मूठी दइने तूर्त। दत्तधून सांभाळतां मूर्त (41)
मुठिका बाँधि भागतेउ सुनी। दत्त दत्त नामन्ह कर धुनी।
करी धूप गाए जे एम। दत्तबावनी आ सप्रेम (42)
धूप दिखाइ गाइ करि नेमा। दत्तबावनी पाठ सपेमा।
सुधरे तेना बंने लोक। रहे न तेने क्यांये शोक (43)
सो साधै आपन दुइ लोका। तौं उर माझ बसै नहि सोका।

दासी सिद्धि तेनी थाय। दु:ख दारिद्र्य तेनां जाय (44)
सिद्धि दासि होवे तिस केरि। मिटत सकल दुख दारिद हेरि।
बावन गुरुवारे नित नेम। करे पाठ बावन सप्रेम (45)
गुरुबासर बावन नित नेमा। बावन पाठ करिअ सह पेमा।
यथावकाशे नित्य नियम। ने कदि न दंडे यम (46)
पाइ समय बाचे नर जोई। ताकर जमजातना न होई।
अनेक रूपे एज अभंग। भजतां नडे न माया रंग (47)
बिबिध रूप गत एकु अभंगा। हरत भगत के माया संगा।
सहस्र नामे नामि एक। दत्त दिगंबर असंग छेक (48)
नामु सहस नामी इक रंगा। दत्त दिगंबर नाथ असंगा।
वंदुं तुजने वारंवार। वेद श्वास तारा निर्धार (49)
बंदौ दत्तचरण सत बारा। स्वासु बेदु तव जनु निर्धारा।
थाके वर्णवतां ज्यां शेष। कोण रांक हुं बहुकृतवेष (50)
सेसु न सकत करिअ गुनगाना। तौ फुर नाथ कहौं किमि आना।
अनुभव-तृप्तिनो उद्‌गार। सूणी हसे ते खाशे मार (51)
अनुभव तृप्तिहि के उद्‌गारा। अवमानी कर भंजनिहारा।
तपसी तत्त्वमसि ए देव। बोलो जय जय श्रीगुरुदेव (52)
तापस तत्त्वमसी तनु देवा। बोलहु जै जै स्री गुरुदेवा।

॥ अवधूत चिन्तन श्रीगुरुदेव दत्त॥

(छंद : चौपाई, रचनातिथि : 21 अगस्त 2025 ई. गुरुपुष्य)

टिप्पणी: चूंकि भगवान् दत्तात्रेय ने मूल गुजराती स्तोत्र को ही प्रशस्त किया था, अत: उसी का पाठ फलदायी है। हमने तो केवल स्वान्त:सुखाय चौपाइयों के रूप में यहाँ उसका पद्यमय भावानुवाद किया है। नारायणस्मृति:॥ ❐

श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा दिल्ली (पंजी.)

पंजीकृत कार्यालय :

श्रीसनातनधर्म हरि मंदिर गर्ल्स सी. सै. स्कूल देसराज भाटिया मार्ग, नई दिल्ली-55

प्रशासनिक कार्यालय :

श्री गुरु रामराय उदासीन आश्रम, आराम बाग लेन, पहाड़गंज, नई दिल्ली-110055

9212160532, 9811011363

सनातन संदेश

वर्ष-25 ● अंक-04 ● पृष्ठ संख्या-36

● दीपावली अंक ● अक्टूबर 2025

महत्वपूर्ण सूचना

प्रिय पाठको! अक्टूबर, 2025 का यह अंक दीपावली पर आधारित है। आशा है पूर्व की तरह ही आप लोगों का सहयोग 'सनातन संदेश' को मिलता रहेगा। पत्रिका से संबंधित किसी भी बात के लिए नि:संकोच सम्पर्क करें-

संपादक, सनातन संदेश

श्री गुरु रामराय उदासीन आश्रम, आराम बाग लेन,
पहाड़गंज, नई दिल्ली-110055
दूरभाष: 9811206366, 9212160532, 9811011363